जब कालीन पर पतरस को बुलाया गया (11:1-18)

प्राचीन काल में, इंग्लैंड की हवेलियों में अक्सर कालीन केवल बैठकों में ही बिछे होते थे। घर के मालिक के सामने (आम तौर पर डांट डपट करने के लिए)। बुलाए जाने को ''कालीन पर बुलाना'' कहा जाता था। हाल ही के वर्षों में, अंग्रेज़ी समाजों ने लोगों को ''कालीन पर'' बुलाने के विचार को अपना लिया। जब भी अधिकारी कोई जांच - पड़ताल करते तो मेज़ के अगले सिरे पर कालीन का एक भाग निकाल दिया जाता था। पूछताछ के दौरान, अधिकारी मेज़ के इर्द - गिर्द बैठ जाते और आरोपी उनके सामने कालीन पर खड़ा हो जाता था। संसार के अनेक भागों में ''कालीन पर बुलाने'' का अर्थ ''किसी को हिसाब देने के लिए बुलाना'' हो चला है।

कालीन पर बुलाया जाना कभी भी सुखद नहीं रहा है, परन्तु सम्भवत: हम में से बहुतेरों को कभी न कभी उस पर बुलाया ही गया होगा। जैसे कि हम इस पाठ में देखेंगे कि प्रेरित पतरस तक को भी कालीन पर बुलाया गया था।[1]

कुरनेलियुस और उसके घराने के मनपरिवर्तन का अध्ययन करते हुए, हमने देखा कि कैसे परमेश्वर ने पतरस और छह यहूदी गवाहों की आपत्तियों को दूर करना था। इन लोगों के मन में अन्यजातियों को कलीसिया में स्वीकार करने के बारे में शंकाएं थीं, इसलिए हमें कोई हैरानी नहीं होती कि अन्य यहूदी मसीही भी संदेह में थे और, इसलिए, पतरस के यरूशलेम में लौटने पर उसे पूछताछ के लिए बुलाया गया।

चौंकाने वाली प्रतिक्रिया (11:1-3)

''और प्रेरितों और भाइयों ने जो यहूदिया में थे सुना, कि अन्यजातियों ने भी परमेश्वर का वचन मान लिया है'' (आयत 1)। पतरस कैसरिया में ही था, इसलिए पूरे यहूदिया में उसकी गतिविधियों से सम्बन्धित अफवाहें फैल गईं। उनमें से कुछ बातें सही थीं, जबकि नि:संदेह बहुत सी झूठ थीं। (मैंने घोड़ों के एक मालिक के विषय में पढ़ा था जिसने रेस के अपने घोड़ों में से एक का नाम ''बैड न्यूज़'' अर्थात बुरी ख़बर रखा था। जब उससे इस असामान्य नाम रखने का कारण पूछा गया, तो वह मुस्कुराया और कहने लगा, कि ''बुरी ख़बर जल्दी फैलती है।'')

बाद में पतरस यरूशलेम लौट आया।[2] ''और जब पतरस यरूशलेम में आया, तो खतना किए हुए लोग उससे वाद - विवाद करने लगे। कि तूने खतनारहित लोगों[3] के यहां जाकर उन के साथ खाया'' (आयतें 2, 3)। वाक्यांश ''खतना किए हुए लोग'' का अर्थ ''यहूदी'' ही है, परन्तु यहां पर यह शब्द यहूदी मसीहियों के लिए प्रयुक्त हुआ है। ये पहली आयत में वर्णित ''प्रेरित और भाई जो यहूदिया में थे'' हो सकते हैं, परन्तु सम्भवत: यह यरूशलेम की कलीसिया के अन्दर का एक गुट है जो मूसा की व्यवस्था को मानने के लिए दृढ़संकल्प था। (हो सकता है वे ''फरीसियों के पंथ में से'' [15:5] हों जिन्होंने बाद में समस्याएं उत्पन्न कीं।) यह तथ्य कि उन्होंने पतरस को कालीन पर बुलाया, संकेत देता है कि अन्य प्रेरित उन्हें चुप नहीं करा सके थे; इससे यह संकेत भी मिल सकता है कि वे प्रेरित उनसे सहानुभूति रखते थे।[4] (संयोग से, यह तथ्य कि पतरस को ''कलीसिया के साधारण सदस्यों'' द्वारा कारण बताने के लिए बुलाया जा सकता है, संकेत देता है कि वह ''कलीसिया का अचूक सिर [मुखिया]'' *नहीं* था, जैसा कि आज कई लोग दावा करते हैं।)

पतरस के विरुद्ध लगाया गया आरोप यह नहीं था कि ''तूने खतनारहित लोगों के यहां जाकर उन्हें *बपतिस्मा* दिया,'' बल्कि यह था कि ''तूने खतनारहित लोगों के यहां जाकर उनके साथ खाना *खाया।*''[5] अन्यजातियों को कलीसिया में स्वीकार करने में सबसे बड़ी रुकावट *संगति* की बात थी। आलोचकों ने स्पष्टत: तब तक अन्यजातियों को बपतिस्मा देने की अनुमति पर आपत्ति नहीं की जब तक उन्होंने उनके साथ देखा नहीं अथवा उनके साथ मेल जोल नहीं किया, परन्तु वे अन्यजातियों की आराधना में एक ओर बैठने या किसी प्रीति भोज में उनके भोजन करने का समर्थन नहीं कर सकते थे![6] (उन्हें पृथक मण्डलियों की बात प्रिय लगती होगी।)

इसलिए, हमारी कहानी, पतरस के कार्यों की आलोचना से आरम्भ होती है, परन्तु यह हमारी मुख्य दिलचस्पी नहीं है। आलोचकों या आलोचना की बात कोई नई नहीं है। उनको दिए पतरस के उत्तर में हमारे लिए सबक हैं।

पतरस ने क्या नहीं किया (11:4-17)

आइए उन घटकों पर ध्यान देते हुए आरम्भ करें जो पतरस के उत्तर का भाग *नहीं* थे। पहला, जब उसे कालीन पर बुलाया गया तो पतरस चकित *नहीं* हुआ। वास्तव में, वह पहले से तैयार था। वह अपने साथ कैसरिया में छह यहूदी मसीहियों को ले गया था (10:23, 45-47) और उन्हें याफा वापस भेजने के बजाय अपने साथ यरूशलेम में लाया था (11:12)। जब आप या मैं सामान्य से कुछ हटकर करने की कोशिश करते हैं, तो आलोचना होने पर हमें हैरान नहीं होना चाहिए। इतिहास के महानतम पुरुषों में से जिनकी सबसे अधिक आलोचना होती है, विन्सटन चर्चिल, एक था। उसने आलोचना को एक ऐसी वस्तु कहा जिसकी कभी कमी नहीं होती है।

दूसरा, जब उसे कालीन पर बुलाया गया तो पतरस को क्रोध *नहीं* आया। उसने यह नहीं कहा, ''मुझे चुनौती देने का तुमने साहस कैसे किया! मैं एक प्रेरित हूं, बल्कि उन

में भी अगुआ हूं। यह मत भूलो कि यीशु ने *मुझे* राज्य की कुंजियां दी हैं!'' छानबीन से किसी को भी छूट नहीं है, चाहे वह कितना भी प्रभावशाली व्यक्ति क्यों न हो।

तीसरा, पतरस ने वैसा ही उत्तर *नहीं* दिया। आयत 2 में वाक्यांश ''उससे वाद - विवाद करने लगे'' संकेत देता है कि वे पतरस के साथ कठोरता बरत रहे थे। NIV में इसका अनुवाद है उन्होंने ''उसकी अलोचना की''; इंफैसाइज़्ड न्यू टैस्टामेंट में ''उसमें दोष ढूंढने लगे'' है। पतरस अपने आलोचकों पर उल्टा प्रहार करके उनमें कमियां निकाल सकता था परन्तु उसने ऐसा नहीं किया। इस प्रकार की प्रतिक्रिया से, स्वाभाविक ही है, कि कुछ प्राप्त नहीं होना था। बाइबल हमें *बुराई* के बदले भलाई करने की चुनौती देती है (लूका 6:27; रोमियों 12:21)।

पतरस की चुप्पी और क्रमबद्ध उत्तर देना दिखाता है कि प्रभु यीशु मसीह लोगों को कैसे बदल सकता है। सुसमाचार के वृत्तांतों में हम पढ़ते हैं कि पतरस एक भावुक व्यक्ति था, जो अपने मन की बात कहने में उतावला था। प्रेरितों 11 जैसा आक्रमण पतरस पर यदि कालान्तर में हुआ होता, तो वह वही लौटाता जो उसे मिला था जिससे यरूशलेम की कलीसिया विभाजित हो जाती। प्रभु पतरस को परिपक्व होने में सहायता कर रहा था।

पतरस ने क्या किया (11:4-17)

जब पतरस को कालीन पर बुलाया गया तो उसने क्या *किया* ? उसने अपने साथ हुए दुर्व्यवहार की वजह से दोस्तों की ओर भागने के बजाय आरोप लगाने वालों का सामना किया। वह अपने आलोचकों की आंखों में झांकता हुआ ''कालीन पर चौपड़ मारकर खड़ा था।'' यीशु ने सिखाया कि जब ''तेरे भाई के मन में तेरे प्रति विरोध हो'' तो तुम्हें *पहले* उसके पास जाना चाहिए (मत्ती 5:23, 24)। पतरस ने यही किया और आपको और मुझे भी यही करना चाहिए।

दूसरा, अति उत्तेजित होने के बजाय, वह शान्त रहा। हिंसा हिंसा को जन्म देती है। यदि आलोचना होने पर आप अति उत्तेजित हो जाते हैं, तो जिन्होंने आपकी आलोचना की है, उनके साथ बात करने से पहले शान्त होने के लिए अपने आपको कुछ समय दें।

तीसरा, पतरस ने अपने विचारों को तरतीब दी और तथ्य प्रस्तुत किए: ''तब पतरस ने उन्हें आरम्भ से क्रमानुसार कह सुनाया'' (आयत 4)। अफ़वाहों की गर्म आग को केवल ठण्डे तथ्य ही बुझा सकते हैं।

पतरस ने अपना दर्शन बताते हुए आरम्भ किया:[7]

> कि मैं याफा नगर में प्रार्थना कर रहा था, और बेसुध होकर एक दर्शन देखा, कि एक पात्र, बड़ी चादर के समान चारों कोनों से लटकाया हुआ, आकाश से उतरकर मेरे पास आया। जब मैंने उस पर ध्यान किया, तो पृथ्वी के चौपाए और बनपशु और रेंगनेवाले जन्तु और आकाश के पक्षी देखे (आयतें 5, 6)।

अपने दर्शन का वर्णन करते हुए, पतरस ने आलोचना का उत्तर देकर बुद्धि का प्रदर्शन किया। उसने उसमें दोष ढूंढने वालों को दिखाया कि वह उनके विचारों को समझता है। ''और यह शब्द भी सुना कि हे पतरस उठ मार और खा। मैंने कहा, नहीं प्रभु, नहीं, क्योंकि कोई अपवित्र या अशुद्ध वस्तु मेरे मुंह में कभी नहीं गई'' (आयतें 7, 8)। अन्य शब्दों में, पतरस ने कहा, ''मैं समझ सकता हूं कि मेरे किए से आपको परेशानी क्यों है। कुछ दिन पहले तक, मुझे भी बिल्कुल ऐसे ही लगता था!'' आलोचना का उत्तर देते हुए, अपने आलोचक का पक्ष लेने और इसे समझने का भरसक प्रयास करें कि वह ऐसी प्रतिक्रिया क्यों कर रहा है।

पतरस ने दर्शन के बारे में बताना जारी रखा: ''इस के उत्तर में आकाश से दूसरी बार शब्द हुआ, कि जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे अशुद्ध मत कह। तीन बार ऐसा ही हुआ; तब सब कुछ फिर आकाश पर खींच लिया गया'' (आयतें 9, 10)। अपने मन में ''परमेश्वर'' शब्द को रेखांकित कर लें। पतरस ने अपने प्रवचन में दस या इससे अधिक बार परमेश्वर का उल्लेख किया। पतरस के उत्तर की मुख्य बात यह थी कि उसने वह नहीं किया जो *वह* करना चाहता था, बल्कि वह किया जो *परमेश्वर* ने उसे करने के लिए कहा। पतरस की तरह हमें प्रभु से दर्शन नहीं मिलेगा, परन्तु उसकी इच्छा बताने के लिए हमारे पास वचन है। यदि हम कुछ ऐसा करते हैं जिसकी आलोचना हो, तो अपने कार्यों के लिए ''पुस्तक, अध्याय, और आयत'' का हवाला लेना समझदारी है।

अपनी बात को जारी रखते हुए, पतरस ने परमेश्वर के पूर्व प्रबन्ध की अगुआई पर ज़ोर दिया: ''और देखो, *तुरन्त* तीन मनुष्य जो कैसरिया से मेरे पास भेजे गए थे, उस घर पर जिस में हम थे, आ खड़े हुए। तब आत्मा ने मुझ से उन के साथ बेखटके हो लेने को कहा'' (आयतें 11, 12क)। पतरस परमेश्वर की समयसारणी से प्रभावित था।

फिर पतरस ने प्रमाण दिया कि जो कुछ वह कह रहा था, वह सत्य था। विशेषकर, उसने उन यहूदी गवाहों की बात की जिन्हें वह अपने साथ ले गया था। ''और ये छह भाई [पतरस ने संभवत: अपने साथ के इन लोगों की ओर इशारा किया होगा] भी मेरे साथ हो लिए'' (आयत 12ख)। पुराना और नया दोनों ही नियम गवाहों के महत्व पर ज़ोर देते हैं (व्यवस्थाविवरण 17:6; मत्ती 18:16)। यद्यपि पतरस आत्मा की प्रेरणा पाया हुआ प्रेरित था, फिर भी उसने दूसरों से यह अपेक्षा नहीं की कि वे उसकी कही हर बात को स्वीकार कर लें। कई बार हमें कालीन पर बुलाये जाने पर जब चेहरे को देखकर लोग हमारी बात पर विश्वास नहीं करते तो हमारी भावनाएं आहत होती हैं। आरम्भिक कलीसिया में सबसे अधिक प्रसिद्ध अगुवे को सहयोग के लिए प्रमाण की आवश्यकता थी और यदि हमारे साथ भी ऐसा होता है तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है?

यह प्रमाणित करने के बाद कि छह गवाह उसकी कहानी की पुष्टि कर सकते थे, पतरस बहस के मुख्य बिन्दु पर आया:

> ... और हम उस मनुष्य के घर में गए। और उस ने बताया, कि मैं ने एक

> स्वर्गदूत को अपने घर में खड़ा देखा, जिस ने मुझ से कहा, कि याफा में मनुष्य भेजकर शमौन को जो पतरस कहलाता है, बुलवा ले। वह तुम से ऐसी बातें कहेगा, जिन के द्वारा तू और तेरा सारा घराना उद्धार पाएगा (आयतें 12ग-14)।

परमेश्वर की प्रेरणा न केवल पतरस को ही मिली, बल्कि उन अन्यजातियों को भी मिली थी जिनके पास उसे भेजा गया था।

अन्त में, पतरस कैसरिया में उस यादगारी दिन के चरम पर आया: ''जब मैं बातें करने लगा, तो पवित्र आत्मा उन पर उसी रीति से उतरा, जिस रीति से आरम्भ[10] में हम[11] पर उतरा था। तब मुझे प्रभु का वह वचन याद आया; जो उस ने कहा; कि यूहन्ना ने तो पानी से बपतिस्मा दिया, परन्तु तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे'' (आयतें 15, 16; तु. 1:5)। पतरस के सुनने वाले चकित थे। मैं कल्पना करता हूं कि वे छह गवाहों की ओर मुड़कर उन से पूछने लगे, ''क्या सचमुच ऐसा ही हुआ? क्या *अन्यजातियों* को भी उसी प्रकार आत्मा का बपतिस्मा मिल सका जैसे पिन्तेकुस्त के दिन प्रेरितों को मिला था?'' मैं उन छह पुरुषों को सिर हिलाकर यह कहते हुए देखता हूं; हां बिल्कुल ऐसे ही हुआ था जैसे पतरस ने बताया।

पतरस अपने क्रमबद्ध वृत्तांत को समेटने के लिए तैयार था: ''सो जब कि परमेश्वर ने उन्हें भी वही दान दिया, जो हमें प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने से मिला था;[12] तो मैं कौन था जो परमेश्वर को रोक सकता?'' (आयत 17)। पतरस के इस प्रश्न का अभिप्राय था, कि ''यदि तुम मेरी जगह होते, तो क्या *तुम* परमेश्वर के मार्ग में रुकावट डालते?'' जब आपको कालीन पर बुलाया जाए, तो आपके लिए केवल अपने आलोचकों के स्थान पर स्वयं को रखना ही समझदारी नहीं है; उनसे यह कहना भी अच्छी बात है कि वे अपने आप को आपके स्थान पर रखें।

पतरस के इस उत्तर का अध्ययन करने के लिए समय निकालें।[13] अगली बार जब कोई आपकी आलोचना करे तो आप इसके लिए और अच्छी तरह से तैयार होंगे।

एक संतोषजनक परिणाम (11:18)

आयत 18 में वर्णित परिणाम से अधिक संतोषजनक परिणाम की कल्पना करना कठिन होगा। आयत ''यह सुनकर...'' से आरम्भ होती है। पतरस के आलोचक सुनने के इच्छुक थे। मतभेदों को दूर करने की कुंजी आम तौर पर सम्प्रेषण होती है, और सम्प्रेषण की कुंजी आम तौर पर और ध्यान देने का मनोभाव होता है।

आगे, आयत यह टिप्पणी करती है कि ''वे चुप रहे'' (आयत 18ख)। स्पष्टत:, पतरस के साथ सामना *शोरगुल* भरा था। आरोप लगाए गए थे, मिजाज़ बेशक भड़के हुए थे और स्वर ऊंचे थे परन्तु पतरस के उत्तर ने भीड़ को शान्त कर दिया था। यह दर्शाता है कि ''कोमल उत्तर सुनने से जलजलाहट ठण्डी होती है'' (नीतिवचन 15:1)।

तथापि, उसके उत्तर का सबसे संतोषजनक भाग यह नहीं है कि पतरस के आलोचक

शान्त हो गए, बल्कि यह है कि वे ''परमेश्वर की बड़ाई'' करने लगे (आयत 18ग)। उन्होंने देखा कि जो कुछ हुआ उस सबमें *परमेश्वर* का हाथ था और परमेश्वर के मार्ग में रुकावट नहीं बनना चाहिए। इसलिए, उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला, ''तब तो परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी जीवन के लिए मन फिराव[14] का दान दिया है'' (आयत 18घ)। यहूदियों और अन्यजातियों के बीच की दीवारों को गिराने के लिए यह एक और बड़ा कदम उठाया गया था।

सारांश

अगली बार जब आपको कालीन पर बुलाया जाए, तो मुझे आशा है कि परिणाम उतने ही संतोषजनक होंगे जितने कि प्रेरितों 11 में पतरस के लिए थे। ऐसा हो भी सकता है और नहीं भी। यदि परिणाम उस सबके अनुसार न भी हों जैसा आप चाहते थे, फिर भी आप जो कुछ हुआ उस सब के लिए अच्छा अनुभव कर सकते हैं यदि (1) आप वैसे ही प्रत्युत्तर दें जैसे पतरस ने दिया था और (2) आप अनुभव से सीखने की पूरी कोशिश करें।

परमेश्वर हमारी सहायता करे कि जब हमें कालीन पर बुलाया जाए तो हम वैसे ही करें जैसे कि मसीहियों को करना चाहिए!

विज़ुअल - एड नोट्स

यदि आप वाक्यांश ''कालीन पर बुलाया गया'' के मूल पर परिचय का उपयोग करते हैं तो, चित्र द्वारा समझाने अर्थात विज़ुअल – एड नोट्स के लिए कालीन/चादर के एक छोटे टुकड़े का उपयोग करें। जब भी आप इस पर ज़ोर देना चाहें कि जब पतरस को कालीन पर बुलाया गया तो उसने उसका प्रत्युत्तर कैसे दिया और हमें इसका उत्तर कैसे देना चाहिए, आप उस चादर पर खड़े हो जाएं। (कालीन की दुकान से आपको एक कालीन के कुछ नमूने भी मिल सकते हैं।)

प्रवचन नोट्स

प्रेरितों के काम की पुस्तक में कई बार, कलीसिया के अगुओं को मण्डलियों में उत्पन्न हुई समस्याओं से जूझना पड़ा था (प्रेरितों 5; 6; 11; 15)। ''कलीसिया में मुश्किलों से कैसे निपटा जाए'' पर एक लाभदायक श्रृंखला तैयार करके प्रचार किया जा सकता है।

पाद टिप्पणियां

[1]इस पाठ का एक वैकल्पिक शीर्षक ''जब पतरस को जवाब देने के लिए बुलाया गया'' भी हो सकता है। [2]वैस्टर्न टैक्सट संकेत देता है कि पतरस कुछ देर के लिए गया था। वैस्टर्न टैक्सट, प्राचीन हस्तलिपियों की प्रतियों के अनुवाद को कहा जाता था, जिसका उपयोग रोम और उसके आसपास तीसरी और चौथी सदियों में होता था। वैस्टर्न टैक्सट की मुख्य विशेषता विस्तार देने में इसका झुकाव है। ऐसा माना जाता है कि अतिरिक्त बातों को आत्मा की प्रेरणा से नहीं दिया गया है। [3]यह पद हमें सूचित करता है कि कुरनेलियुस और उसके घराने ने यहूदी मत धारण नहीं किया था; बल्कि, वे खतनारहित परन्तु ''परमेश्वर का भय मानने वाले'' थे। [4]पहली बार अन्यजातियों में प्रचार करने के लिए परमेश्वर यदि पतरस के स्थान पर किसी और को बुलाता, तो कोई संदेह नहीं कि उस प्रेरित के यरूशलेम में लौटने पर, *पतरस* भी *उसे* कालीन पर बुलाता। [5]''प्रेरितों के काम, भाग-2'' में 10:9-16, 23, 48 पर नोट्स देखिए। [6]कई टीकाकारों का मत है कि पतरस के आलोचक न केवल अपनी व्यक्तिगत आपत्तियां उठा रहे थे, बल्कि अपना भय दिखा रहे थे कि अन्यजातियों के सुसमाचार को ग्रहण करने की बात यरूशलेम में यहूदी सताव की आग को फिर से भड़का देगी। ये टीकाकार इस प्रमाण के रूप में प्रेरितों 12 के सताव के पुनर्जागरण की ओर इशारा करते हैं कि आलोचकों का भय निराधार नहीं था। [7]5 से 17 आयतों तक नोट्स के लिए, ''प्रेरितों के काम भाग-2'' में कुरनेलियुस के मनपरिवर्तन पर अध्ययन देखिए। [8]पतरस के इन्कार की तुलना यहेजकेल 4:14 में यहेजकेल के विरोध से करें। [9]यह रोचक बात है कि पतरस ने अपने बचाव के रूप में कुरनेलियुस के विशिष्ट चरित्र का उल्लेख नहीं किया। पतरस की आलोचना करने वालों को यह परवाह नहीं थी कि कुरनेलियुस भला था या बुरा; उन्होंने पतरस के उसके साथ भोजन करने का विरोध केवल इसलिए किया क्योंकि वह एक अन्यजाति था। [10]यह प्रेरितों 2 अध्याय वाला पिन्तेकुस्त का दिन था। ''प्रेरितों के काम, भाग-2'' के अन्तिम दो पाठों में नोट्स देखें।

[11]''हम'' शब्द प्रेरितों की ओर इशारा करता है। 88''प्रेरितों के काम, भाग-2'' के अन्तिम दो पाठों में नोट्स देखें। [12]वाक्यांश ''हमें प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने से'' में ''हमें'' शब्द प्रेरितों के लिए है। NIV में ''जैसे उसने हमें दिया, जिन्होंने प्रभु यीशु में विश्वास किया'' है (अंग्रेज़ी के अन्य अनुवाद KJV, RSV, ASV आदि भी देखिए)। [13]इसकी समीक्षा के लिए कि जब पतरस को कालीन पर बुलाया गया था तो उसने क्या *किया* और क्या *नहीं किया,* पर हमें विचार करना चाहिए। [14]यहां मन फिराव को कम से कम दो कारणों से परमेश्वर की ओर से दान कहा गया है: (1) परमेश्वर ने अन्यजातियों को मन फिराव का अवसर दिया था, और (2) वह, वह अवसर (अर्थात सुसमाचार) उपलब्ध करवाता है जो मन फिराव को जन्म देता है।